हिंदी भाषा – देवनागरी लिपि का महत्व

Jignasa Project work in Hindi

Submitted by

Ankush Kumari

Rupesh Kumar

Pooja Gautham

Shahana Parveen

M. Dikshita

UNDER THE GUIDANCE OF

DR. K MADHAVI

ASSISTANT PROFESSOR IN HINDI

GDC, KHAIRATABAD

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE, KHAIRATABAD

हिंदी भाषा-देवनागरी लिपि का महत्व

हिंदी भाषा-देवनागरी लिपि का महत्व

प्रस्तावना :

"निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति का मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को सूल ।।"[1]

भारत वह देश है, जहाँ भिन्नता में एकता के दर्शन होते हैं। भारत में कई भाषाएँ हैं। पर राजभाषा का गौरव हिंदी को ही प्राप्त है। गोपाललाल खत्री के अनुसार-

"हिन्दुस्तान की भाषा हिंदी है और उसका दृश्य रूप या उसकी लिपि सर्वगुणकारी नागरी ही है ।"[2]

हिंदी भाषा का विकास 1000 ई. के आसपास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ । भाषाओं का विकास क्रम- संस्कृत-पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-हिंदी (खड़ी बोली)

हिंदी की लिपि देवनागरी है । इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है । हिंदी का प्राचीन रूप ऋग्वेद में मिलता है । हिंदी विश्व की प्राचीन, समृद्ध तथा महान भाषा है और इसकी लिपि देवनागरी होने से इसका वर्चस्व कायम है । विश्व की सभी लिपियों में देवनागरी लिपि को सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि के रूप में मान्यता प्राप्त है ।

आज विश्व में कई भाषाएं हैं । चीनी भाषा मंदारिन के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जानी वाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा है । हिंदी का प्रयोग हर क्षेत्र में हो रहा है । आज हिंदी भाषा के रूप में ही नहीं बल्कि रोजगार के रूप में भी कई लोगों को जीविका प्रदान कर रही है ।

Govt.Degree College, Khairatabad
जिज्ञासा परियोजना
हिंदी भाषा - देव नागरी लिपि का महत्व